

Let's work for Mother Nature

पर्यावरण PERSPECTIVE

January 2022
Not For Sale

पॉलीथिन मुक्त भारत
05

“साइकिल यात्रा कर भारत में
आओ अलख जगायें”

04

प्रदूषण का भय ना उँहे फिर
सतायेगा

12

कविता शीर्षक - हरियाली
08

CONVENTION

“साइकिल यात्रा कर भारत में आओ अलख जगायें” 4

पॉलीथिन मुक्त भारत: हमारी जंग पॉलीथीन प्रदूषण के जिन्ह से 5

भविष्य की पीढ़ियों को विरासत में मिले शुद्ध पर्यावरण 7

कविता शीर्षक - हरियाली 8

शहर-शहर बढ़ती ईको-ब्रिक्स की जागरूकता की कहानी 9

विषैले रसायनों को उत्सर्जित करता पॉलीथीन 10

विषैले रसायनों को उत्सर्जित करता पॉलीथीन 11

प्रदूषण का भय ना उन्हे फिर सतायेगा 12

05



07



08



EDITOR-IN-CHIEF
Rajesh K Rajan

CONSULTING EDITOR
Dr Atanu Mohapatra

EDITOR-ENVIRONMENT
Dr Dhiraj Kumar Singh

EDITOR ENGLISH
Dr Subhash Kumar

EDITOR HINDI
Ankur Vijaivargiya

EDITORIAL TEAM
Lokendra Singh
Dipti Sharma
Kavita Mishra

CREATIVE & GRAPHICS
Alekhya S. Nayak



09

“साइकिल यात्रा कर भारत में आओ अलख जगायें”

कुँवरपाल भैंवर, सह संयोजक ब्रज प्रान्त
(उत्तर प्रदेश)

पर्यावरण रहे संरक्षित, जन जन को समझायें ।
साइकिल यात्रा कर भारत में, आओ अलख जगायें ॥

अपनी-अपनी साइकिल लेकर, देश के वीर जवान चलें ।
खेत और खलिहान छोड़ कर, यात्रा संग किसान चलें ॥

हरित घरों के लिए समर्पित भारत की सब नारी हैं,
बेला, जूही, चमेली चम्पा सँग कचनार की क्यारी हैं ॥

पशु-पक्षी सारे पालें हम, मन का मोर नचायें ।
साइकिल यात्रा कर भारत में आओ अलख जगायें ॥

स्कूलों से छात्र चलें जब, निज साइकिल पर हो तैयार ।
स्वागत के हित थाल सजाकर, बहन खड़ी हों अपने द्वार ॥

नगर-नगर में, गली - गली में फूलों की वर्षा होती ।
दादा जी की उंगली थामे, हर्षित हैं पोता-पोती ॥

जन मानस के हृदय पटल पर ईको ब्रिक्स सजायें ।
साइकिल यात्रा कर भारत में आओ अलख जगायें ॥

साइकिल यात्रा चले गाँव से, खण्डों का हम भ्रमण करें ।
जिला-केन्द्र एकत्रित होकर, जन मानस में जोश भरें ॥

पर्यावरणविदों द्वारा भी हम सब को नव ज्ञान मिले ।
भारत मां की जय-जय होगी, सबको ही सम्मान मिले ॥

वृक्षारोपण, जल संचय, कीचड़ में कमल खिलायें ।
साइकिल यात्रा कर भारत में, आओ अलख जगायें ॥

पॉलीथिन मुक्त भारत: हमारी जंग पॉलीथीन प्रदूषण के जिन्न से

सुरभि तोमर

जि

स पॉलीथीन का वैज्ञानिकों ने मानव जाति की सुविधाओं ने लिए आविष्कार किया था, वह भस्मासुर बनकर समस्त पर्यावरण के विनाश का कारण बनती जा रही है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है "इसका नष्ट ना होना" और उसकी यही विशेषता विश्व के समक्ष सबसे ज़्यादा ख़तरनाक बन गई है। आज हमारी धरती से लेकर समुद्र तक हर तरफ सिर्फ पॉलीथीन ही पॉलीथीन है। पीने के पानी में हम प्लास्टिक पी रहे हैं। नमक में प्लास्टिक खा रहे हैं। प्रति वर्ष लाखों की संख्या में जलीय जीव प्लास्टिक प्रदूषण से मर रहे हैं। गाय इत्यादि पौलीथीन खा कर मरणासन्न स्थिति में पहुंच रहे हैं। सभी जीव जंतु और मानव जाति के लिए काल बनी पॉलीथीन के बारे में कुछ बातें जान लेते हैं।

कैसे हुई पॉलीथीन की खोज?

जिस रूप में आज हम पॉलीथीन का उपयोग कर रहे हैं, इसकी खोज मार्च 1933 में अनजाने में हुई थी। दो ब्रिटिश वैज्ञानिक एरिक फ्रांसिस और रेजिनाल्ड गिब्सन इंपीरियल केमिकल इंडस्ट्रीज में इथाईलीन का प्रयोग कर रहे थे। तभी थाली में ऑक्सीजन के अणु मिल जाने से रातों-रात पॉलीथीन बन गया। इसके 2 वर्ष बाद उन्होंने पॉलीथीन बनाने की विधि का आविष्कार किया। उस समय यह दोनों वैज्ञानिक भी नहीं जानते होंगे कि उनका अविष्कार एक दिन पर्यावरण के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन जाएगा।

बोतल बंद पानी में भी प्लास्टिक

जिस बोतल बंद पानी को हम स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित मानकर खरीद कर पी रहे हैं, उन्हें भी पॉलीथीन के कण पाए गए हैं। न्यूयॉर्क में वैज्ञानिकों ने एक शोध किया। इस शोध में 5 देशों में 19 स्थानों की 25 ग्राम बोतलों का अध्ययन किया गया, जिनमें प्रति लीटर पानी में औसतन 325 माइक्रोप्लास्टिक कण पाये गए। किसी किसी बोतल में तो इनकी संख्या 10,000 तक भी देखी गई। 259 बोतलों में से केवल 17 बोतलों का जल प्लास्टिक मुक्त मिला। इसका कारण है कि प्लास्टिक कचरा भूजल को भी प्रदूषित कर रहा है। मिनरल वाटर बेचने वाली कंपनियां इसी भूजल का प्रयोग करती हैं। लेकिन पानी को स्वच्छ करने वाली प्रक्रिया में प्लास्टिक के सूक्ष्म कण समाप्त नहीं हो पाते। घरों में आपूर्ति किए जाने वाले पानी में भी इनकी मात्रा काफी ज्यादा है।

प्लास्टिक हमारे लिए बनता जा रहा है नासूर

हम अपने दैनिक जीवन में अधिकतर प्लास्टिक की बनी वस्तुओं का प्रयोग कर रहे हैं। पॉलीथीन और सिंगल यूज प्लास्टिक हमारे घर के अंदर घुस गया है। हमारी सब्जियां, हमारा खाना, हमारे खाने के पदार्थ आटा इत्यादि हर चीज पॉलीथीन में आने लगी है। जो अब हमारे शरीर में भी घर कर गए हैं। अब तक किए गए अध्ययनों के अनुसार एक बार शरीर में पहुंचने पर प्लास्टिक रक्त का हिस्सा बन जाता है और कभी बाहर नहीं आता। पॉलीथीन तत्वों से शरीर में पहुंचने पर उस जनन क्षमता और सोचने समझने की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है। मोटापा डायबिटीज और कैंसर का इलाज निष्प्रभावी होना भी इसके दुष्प्रभावों में से एक है।

भयंकर बाढ़ का एक कारण पॉलीथीन

पॉलीथीन वैश्विक तापमान वृद्धि का भी एक कारण है। इसको जलाने से कार्बन डाइऑक्साइड कार्बन मोनोऑक्साइड सहित कई अन्य विषैली गैसें निकलती हैं। इनसे कई गंभीर बीमारियां होने का खतरा बढ़ जाता है। हम उपयोग करो और फेंक दो गाली उपभोक्ता संस्कृति के अभ्यस्त होते जा रहे हैं जबकि एकल उपयोग वाली पॉलीथीन पर्यावरण चुनौतियों में से प्रमुख है। पॉलीथीन कचरा शहरों में नालों नालियों को बंद कर रहा है जिससे बाढ़ और मच्छर के प्रजनन से मच्छर जंतु बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। 2006 में मुंबई में आई भयंकर बाढ़ का एक कारण यहां के नालों तथा गङ्गां में फेंका गया पॉलीथीन का कचरा भी था।

देश के पशुधन को भी खतरा

हमें 4 R को अपनी जीवनशैली में शामिल कर लेना चाहिए.

- रिड्यूस
- रीयूज
- रीसायकल - उसको वापस से इस्तेमाल के लिए बनवाना .
- रिसीव - कभी भी इस्तेमाल नहीं

पॉलिथीन कचरा पशुधन द्वारा खा लिया जाता है. पॉलिथीन कचरे के कारण हम प्रतिवर्ष 100000 समुद्री जीवों और 10 लाख पक्षियों तथा हजारों पशुधन को खो रहे हैं. यही नहीं प्लास्टिक कचरा जमीन की पी एवं वॉल्यूम बढ़ा देता है. मिट्टी की उर्वरा शक्ति घटने लगती है. मिट्टी के फास्फोरस और पोटाश ऐम तत्व खत्म होने लगते हैं. भूमि बंजर हो रही है. भूजल का स्तर तेजी से गिरता जा रहा है।

प्लास्टिक उपभोग के आंकड़े

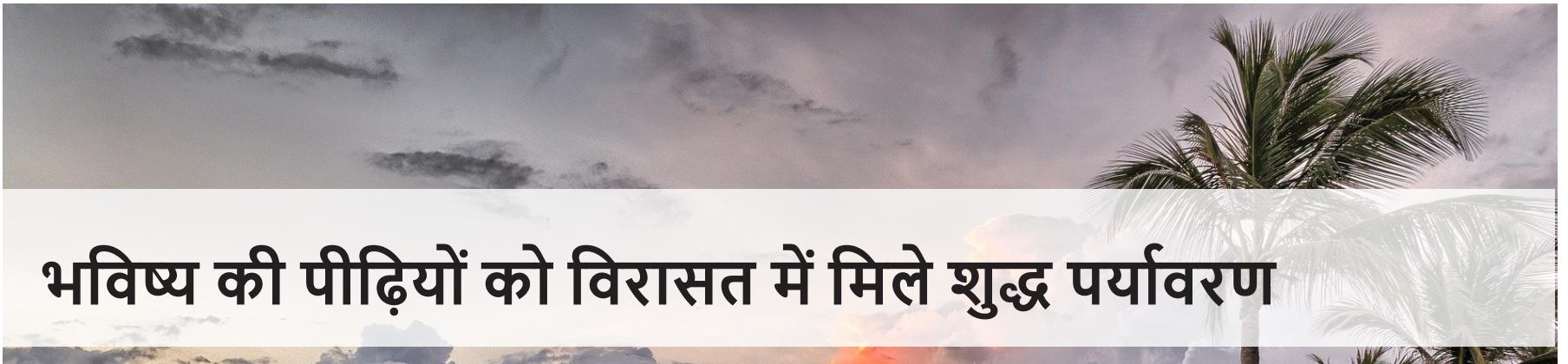
हमारी दिनचर्या के हिस्सा बन चुके प्लास्टिक और पॉलिथीन के उपभोग की दृष्टि से देखा जाए तो अमेरिका शीर्ष पर है. यहां पर प्रति व्यक्ति 109 किलोग्राम प्लास्टिक का उपभोग किया जाता है. भारत प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति 11 किलोग्राम प्लास्टिक का उपभोग कर इस सूची में पांचवें स्थान पर है. भारत का प्रत्येक नागरिक जाने अनजाने 340 ग्राम के जैविक कचरा पैदा कर रहा है, जिसका 30% प्लास्टिक है. देखने सुनने में यह आंकड़ा बहुत कम प्रतीत होता है लेकिन भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए इसका प्रभाव व्यापक है. एसोचैम की एक रिपोर्ट

के अनुसार यदि स्थिति ऐसी ही बनी रही तो वर्ष 2050 तक अपशिष्ट प्रबंध के लिए नई दिल्ली के क्षेत्रफल जितना बड़ा कचरा घर बनवाना पड़ेगा, एसोचैम का यह उदाहरण काल्पनिक है लेकिन तर्क दमदार है।

पॉलिथीन कचरे के निस्तारण के लिए जरूरी

समाज के कुछ लोग एवं संगठन अपने अपने स्तर पर भी पर्यावरण की रक्षा में लगे हुए हैं. उनके प्रयासों में हम सहयोग देंगे, हम सब की प्राथमिकता में पर्यावरण होना चाहिए। पॉलीथीन का उपयोग बंद करना क्यों आवश्यक है? इसके लिए समाज के चलाए जा रहे जागरूकता अभियानों में तेजी लानी होगी। दरअसल प्लास्टिक उत्पाद सस्ते और सुलभ होते हैं. इसलिए उन पर हमारी निर्भरता बढ़ गई है और हम सदियों से उपयोग में लाएं जा रहे विकल्पों को भूल गए हैं. हमें बस यही करना है कि पॉलिथीन उत्पादों के विकल्प के तौर पर जैविक पदार्थों से बने उत्पादों का उपयोग अधिक से अधिक करें. इस दिशा में कपड़ों से बने थैले और पत्तों से बनी बर्तनों के प्रयोग से शुरुआत करें. चाय, कॉफी, दही के लिए कूलहड़ का उपयोग करें. कागज के लिफाफे को फिर प्रचलन में लाएं बढ़ेगा।





भविष्य की पीढ़ियों को विरासत में मिले शुद्ध पर्यावरण



राजीव बंसल

वि

कास के इस युग में मानव ने अनेक ऐसी उपयोगी वस्तुओं का अविष्कार किया है, जिन्होंने मनुष्य जीवन को सुविधाजनक बना दिया है। 1965 में अनजाने में हुए ऐसे ही अविष्कार को आज हम माउंट एवरेस्ट से लेकर समुद्र की गहराइयों तक पा सकते हैं। समुद्र के किनारे हो या फिर सुन्दर पहाड़, नदियाँ हो या नालियाँ, घर हो या बाजार, भूमि के ऊपर हो या अंदर, इस मानवीय खोज ने आज ऐसा प्रभाव जमा दिया है कि मनुष्य का दैनिक जीवन इसके बिना अकल्पनीय लगता है। इस उत्सुकता को यही समाप्त करते हुए हम मनुष्य के इसे अपनी सुविधा के लिए उपयोगी वस्तु बना लेने वाले इस अविष्कार के नाम को जानते हैं, यह है पॉलीथीन थैली।

दूध, राशन, सब्जी, फल के साथ पॉलीथीन फ्री

यदि कभी आप अपने घर में एक पॉलीथीन थैली दूढ़ने का प्रयास करे तो आपको सैंकड़ों की संख्या में पॉलीथीन थैली मिल जाएँगी। आज प्रत्येक उत्पाद आपको पॉलीथीन थैली में मिल जायेगा। चाहे घर में रोज आने वाला दूध हो, राशन का सामान हो, सब्जियाँ हो, फल हो, सब कुछ पॉलीथीन थैली में उपलब्ध हैं और घर आकर यह पॉलीथीन बैग कचरे में तब्दील हो जाते हैं। क्या आप जानते हैं कि हमारी इस सुविधा का पर्यावरण पर कितना दुष्प्रभाव पड़ रहा है? हम अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए कितनी गंभीर समस्या खड़ी कर रहे हैं? यदि हम एक माता-पिता होने के नाते अपने बच्चों की पढाई, उनकी नौकरी या रोजगार के बारे में इतने चिंतित रहते हैं, उनके भविष्य के लिए धन संपत्ति के बारे में सोचते हैं तो क्या पॉलीथीन के कारण भविष्य में हमारी अगली पीढ़ी के जीवन में आने वाली समस्याओं और उनके समाधान के बारे में सोचना हमारी जिम्मेदारी नहीं है?

दशकों दूर नहीं होता पॉलीथीन का दंश

आज पॉलीथीन या प्लास्टिक थैली का उपयोग इतनी अधिक मात्रा में हो रहा है कि विश्व भर में प्रतिवर्ष खरबों पॉलीथीन थैली उपयोग के बाद कचरे में तब्दील हो जाती है। अनुमान के अनुसार एक व्यक्ति साल भर में 5 से 6 किलो पॉलीथीन बैग का उपयोग करता है। ये पॉलीथीन थैली आसानी से नष्ट नहीं होती। एक अनुमान के अनुसार पॉलीथीन को नष्ट होने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं। इसका मतलब साठ के दशक से जो भी पॉलीथीन का उपयोग हम लोगों ने किया है, वह नष्ट नहीं हुई है बल्कि किसी न किसी रूप में हमारी नाली को बंद कर रही होगी, गाय या अन्य पालतू पशुओं के पेट में होगी, समुद्र के पानी में तैर रही होगी या फिर मिटटी के अंदर दबकर उसकी उर्वरा शक्ति को नष्ट कर रही होगी। कितना आसान हो गया है न, जब भी जो भी सामान चाहिए, बाजार से आसानी से पॉलीथीन बैग में ले आइये। न गिरने का डर और न ही भीगने का डर। मगर जरा रुकिए, जरा सोचिये, उसके बाद क्या? कुछ समय तक आप आत्म विंतन कीजिये, फिर अगले लेख में विचार करेंगे कि कैसे हम और आप मिलकर बना सकते हैं “पॉलीथीन मुक्त भारत”।

कविता शीर्षक - हरियाली

डॉ निशा महाराणा
प्राचार्य, सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, मन्दसौर

आज तुम्हारा जन्मदिन है,
है खुशियों भरा त्योहार
बोलो बेटे क्या चाहिए,
क्या दूँ तुम्हें उपहार ?

नहीं चाहिए हीरे - मोती,
न धन - दौलत चाह।
मुझे चाहिए केवल माता,
बड़े बुजुगों का आशीर्वाद॥

बड़ों का आशीर्वाद हमेशा रहता छोटों के साथ,
जल्दी बताओ क्या चाहिए, क्या दूँ तुम्हें उपहार ...

प्रदूषण मुक्त गगन दे दो,
प्रदूषण मुक्त चमन दे दो।
भले न दे सके दूध भरी प्याली,
दे सको तो दे दो माता थोड़ी सी हरियाली॥

मैं हारी तुम जीते बेटे,
मैं हारी तुम जीते॥

अपना वचन निभाऊँगी,
हरियाली को लौटाऊँगी।
तेरे हरेक जन्मदिन पर,
अब मैं पेड़ लगाऊँगी॥



शहर-शहर बढ़ती ईको-ब्रिक्स की जागरूकता की कहानी

स्वाति चौहान

प्ला

मेरी की बोतलें और पॉलीथीन बैग- कूड़े-कचरे के ज़रिए इन्होंने पर्यावरण को इतना नुक़सान पहुँचा दिया है कि इन्होंने उपाय हर व्यक्ति के स्तर पर करना ज़रूरी हो गया है। इसी बात को मन में रखकर जब मैंने 3आर मैनेजमेंट कंपनी के मनीष पाठक जी से बात की तो उन्होंने सुन्नाया ईको-ब्रिक्स के रूप में प्लास्टिक बोतलों के इस्तेमाल के लिए। मैंने अपनी मित्रों के सहयोग से इंदिरापुरम् में रेडियो सबरंग नाम से एक इंटरनेट रेडियो शुरू किया है।

इंटरनेट रेडियो की टीम सामाजिक कार्यों से जुड़ी रहे और स्वच्छता की ज़िम्मेदारी साफ़-सफाई से भी ऊपर उठे- यही सोच रखकर मैंने काम शुरू किया। जिसमें आगे ईको-ब्रिक्स के लिए रेडियो सबरंग की सभी महिलाएँ प्लास्टिक की बोतलें इकट्ठी करने और तैयार करने में लग गईं। हमने इंदिरापुरम के शिप्रा सनसिटी में ये बोतलें इकट्ठी कीं और फिर उनमें पॉलीथीन बैग भरे गए। उसे और मज़बूत करने के लिए उसमें हमने रेत भी डाली। इस तरह वो बोतलें ईको-ब्रिक्स बन गईं। हमने शिप्रा सनसिटी के फेझ-2 के प्रबंधक से उनके जॉर्गस पार्क में जगह माँगी और वहाँ महिलाओं की टीम की निगरानी में फूल-पौधों के लिए इन प्लास्टिक की बोतलों से क्यारियों को तैयार किया।

ईको-ब्रिक्स को समाज की स्वीकार्यता

ये अनूठा विचार सभी को बेहद पसंद आया। 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत अभियान के तहत भाजपा के गाजियाबाद महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा जी ने इसका लोकार्पण किया। उनका भी कहना था कि इस तरह का अभियान दूसरी जगहों पर भी किया जाएगा। प्लास्टिक घरों से कम निकले और जो भी निकले वो कचरे के ढेर में पहुँचने के बजाए आस-पास ही इकट्ठा करके रोक लिया जाए। इस सोच के साथ ये जो कोशिश साकार हुई उसने सभी को एक नए तरीके से काम करने का जज्बा दिया है। रेडियो सबरंग और स्वच्छता प्रकोष्ठ इंदिरापुरम की टीम आगे भी इस कोशिश को बढ़ाएगी जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग प्लास्टिक के इस तरह के इस्तेमाल के लिए जागरूक बनें। मैं विशेष धन्यवाद 3आर मैनेजमेंट के मनीष पाठक जी का जिन्होंने हमें दिशा दिखाई और मुझे भरोसा है कि इस तरह के अपने स्तर पर किए जा सकने वाले प्रयासों के लिए उनका मार्गदर्शन हमें मिलता रहेगा।



विषैले रसायनों को उत्सर्जित करता पॉलीथीन

राम गोपाल



विषैले के दो पक्ष हैं। एक वह जो हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाने की वृष्टि से उपयोगी है तो उसका दूसरा पक्ष स्वास्थ्य की वृष्टि से उद्योग फैलने वाला एक ऐसा हानिकारक तत्व जिसे रिसायकल करके दोबारा उपयोग में लाया जा सकता है लेकिन नष्ट नहीं किया जा सकता। अगर इसे नष्ट करने के लिए जलाया जाता है तो अत्यंत हानिकारक विषैले रसायनों को उत्सर्जित करता है, और मिट्टी में गाढ़ा जाता है तो हजारों हजारों साल तक यथावत दबा रहेगा अधिक से अधिक ताप से छोटे-छोटे कणों में टूट जाएगा, लेकिन पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होगा। अगर समुद्र में डाला जाए तो वहां भी केवल समय के साथ छोटे-छोटे टुकड़ों में टूटकर पानी को प्रदूषित करता है। इसलिए विश्व भर में ऐसे प्लास्टिक के प्रयोग को कम करने की कोशिश की जा रही है, जिसे दोबारा इस्तेमाल में नहीं आ सकता।

रिसायकल प्लास्टिक भी पहुंचाता है पर्यावरण को नुकसान

वर्तमान में केवल उसी प्लास्टिक के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसे रिसायकल करके उपयोग में लाया जा सकता है। लेकिन अगर हम सोचते हैं कि इस तरह से पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचा रहा तो हम गलत हैं क्योंकि इसे रिसायकल करने के लिए इसे पहले पिघलाना पड़ता है और उसके बाद भी उससे वो ही चीज़ दोबारा नहीं बन सकती बल्कि उससे कम गुणवत्ता वाली वस्तु ही बन सकती है और इस पूरी प्रक्रिया में नए प्लास्टिक से एक नई वस्तु बनाने के मुकाबले उसे रिसायकल करने में 80% अधिक ऊर्जा का उपयोग होता है साथ ही विषैले रसायनों की उत्पत्ति।

रिसर्च में सामने आए हैरान करने वाले तथ्य

बात केवल यहीं खत्म नहीं होती। अनेक रिसर्च में यह बात सामने आई है कि चाहे कोई भी प्लास्टिक हो वो अल्ट्रावॉयलेट किरणों के संपर्क में पिघलने लगता है। अमेरिका की स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने भारत के अलावा चीन अमेरिका, ब्राज़ील, इंडोनेशिया केन्या लेबनान मेकिसिको और थाईलैंड में बेची जा रही 11 ब्रांडों की 250 बोतलों का परीक्षण किया। 2018 के इस अध्ययन के अनुसार बोतलबंद पानी के 90% नमूनों में प्लास्टिक के अवशेष पाए गए। खास बात यह रही कि सभी ब्रांडों के एक लीटर पानी में औसतन 325 प्लास्टिक के कण मिले।

प्लास्टिक बोतल में बंद दवा भी जहर!

आंकलन है कि दुनिया में हर मिनट 10 लाख प्लास्टिक बोतलें खरीदी जाती हैं जिनमें से 50% कचरा बन जाती हैं। हाल के कुछ सालों में सीरप, टॉनिक जैसी दवाइयां भी प्लास्टिक पैकिंग में बेची जाने लगी हैं क्योंकि एक तो यह कांच की शीशियों से सस्ती पड़ती हैं दूसरा टूटने का खतरा भी नहीं होता। लेकिन प्लास्टिक में स्टोर किए जाने के कारण इन दवाइयों के प्रतिकूल असर सामने आने लगे हैं। प्लास्टिक से होने वाले खतरों से जुड़ी चेतावनी जारी करते हुए वैज्ञानिकों ने बताया है कि प्लास्टिक की चीजों में रखे गए भोज्य पदार्थों से कैंसर और भूरे के विकास में बाधा सहित कई बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

कृत्रिम प्लास्टिक के खतरे से सावधान

इसकी अनेक किसमें हैं जैसे बायोपोल, बायोडिग्रेडेबल पॉलिएस्टर एकोलेक्स, एकोजेहआर आदि या फिर बायो प्लास्टिक जो शाकाहारी तेल, मक्का स्टार्च, मटर स्टार्च, जैसे जैव ईंधन स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है जो कचरे में सूर्य के प्रकाश पानी नमी बैक्टेरिया एंजाइम्स, वायु के घर्षण, और सड़न कीटों की मदद से 47 से 90 दिनों में खत्म होकर मिट्टी में घुल जाए, लेकिन यह महंगा पड़ता है इसलिए कंपनियां इसे नहीं बनातीं। जाहिर है इसलिए सरकारों को सिंगल यूज़ प्लास्टिक ही नहीं बल्कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले हर प्रकार के नॉन बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक का उपयोग ही नहीं निर्माण भी पूर्णतः प्रतिबंधित करके केवल बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक के निर्माण और उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। इससे जब कपड़े अथवा जूट के थैलों और प्लास्टिक के थैलों की कीमत में होने वाली असमानता दूर होगी तो प्लास्टिक की कम कीमत के कारण उसके प्रति लोगों का आकर्षण भी कम होगा और उसका इस्तेमाल भी। विश्व पर्यावरण संरक्षण मूलभूत ढांचे में बदलाव किए बिना केवल जनआंदोलन से हासिल करने की सरकारों की अपेक्षा एक अधूरी कोशिश है। इसे पूर्णतः तभी हासिल किया जा सकता है जब कि प्लास्टिक बनाने वाले उद्योग भी अपने कच्चे उत्पाद में बदलाव लाकर कृत्रिम प्लास्टिक बनाना ही बन्द कर दें और केवल बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक का ही निर्माण करें।



कृत्रिम प्लास्टिक के खतरे से सावधान

प्रदूषण का भय ना उन्हे फिर सतायेगा

अजय गिदिया

हर वर्ष एक व्यक्ति एक पेड़ लगाए व संभालेगा,
तो इस धरती पर कोई न संकट आयेगा।
शांति से सांस लेंगे हमारे ही बच्चे,
प्रदूषण का भय ना उन्हे फिर सतायेगा॥

फूल सुन्दर दिखेंगे जो बगिया मे प्रातः,
दृश्य मधुवन का मन को बड़ा ही ये भाएगा।
ना बीपी की प्रोब्लम ना किसी बीमारी का झंझट,
सुन के चिड़ियो का कलरब दुःख भाग जाएगा॥

मौसमी फल मिलेंगे भरपूर सबको,
तोड़ कर इनको सारा मोहल्ला ही खाएगा।
सारा जगत प्राकृतिक आपदा से बचेगा,
आने वाली पीढ़ी को भी ये जीवन भाएगा॥

“ईश्वरीय कार्य है प्रकृति को बचाना
जो करेगा वो ईश्वर का वरदान पाएगा॥”

पर्यावरण PERSPECTIVE



Contact Us At:
9449802157
sanrakshanparyavaran@gmail.com

Don't forget to visit

WWW.PARYAVARANPERSPECTIVE.COM